पाठ 2

मित्रता

आपने श्रीकृष्ण का नाम सुना है। प्रतिवर्ष आपके विद्यालय में जन्माष्टमी पर्व मनाया जाता है। पुराने समय में आज की तरह विद्यालय नहीं थे। उस समय आश्रम होते थे। सभी बच्चे अपने परिवार से दूर आश्रम में ही रहकर अपने गुरु से शिक्षा प्राप्त करते थे। ऐसे ही गुरु संदीपनी के आश्रम में अन्य बच्चों के साथ श्रीकृष्ण और सुदामा भी पढ़ते थे। दोनों में अच्छी मित्रता थी। वे साथ–साथ मिल–जुलकर खाते, घूमते, पढ़ते व आश्रम के काम करते थे।

अपनी शिक्षा पूरी होने के बाद दोनों अपने–अपने घर चले गए। श्रीकृष्ण मथुरा के राजकुमार थे जो बाद में द्वारिका जाने के बाद द्वारिकाधीश कहलाए।

चित्र 2.1 कृष्ण सुदामा मिलाप

सुदामा अपने गाँव में ही साधारण जीवनयापन कर रहे थे। उनकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। बड़ी मुश्किल से गुजारा हो पाता था। एक दिन सुदामा की पत्नी ने कहा, ''श्रीकृष्ण आपके बचपन के मित्र हैं। आप उनसे सहायता क्यों नहीं लेते।'' सुदामा कई दिनों तक पत्नी की बात को टालते रहे, पर पत्नी के आग्रह पर वे मान गए।

कई दिनों की यात्रा के बाद सुदामा द्वारिका पहुँचे तो, वहाँ का वैभव देखकर आश्चर्यचकित हो गए। श्रीकृष्ण के महल पहुँचकर उन्होंने द्वारपाल से कहा– ''मैं कृष्ण का मित्र सुदामा हूँ और उनसे मिलने आया हूँ। मुझे अंदर जाने दो।'' द्वारपाल ने आश्चर्य से सुदामा को देखा। सुदामा के आग्रह पर उसने अंदर जाकर श्रीकृष्ण को बताया।

सुदामा का नाम सुनते ही श्रीकृष्ण दौड़ते हुए द्वार तक आए और सुदामा को गले लगया। सारे लोग मित्रता के इस अद्भुत मिलन को देखकर अभिभूत हो गए। श्रीकृष्ण सुदामा को आदर सहित अपने सिंहासन तक ले गए। श्रीकृष्ण अपने मित्र सुदामा को देख कर ही उनकी मनः स्थिति समझ गए और उनकी सहायता की।

सोचिए और बताइए

- यदि आपका मित्र आप से बहुत दिनों बाद मिले तो आपको कैसा लगेगा ?
- अपने मित्र से क्या–क्या बातें करेंगे?
- यदि आपका कोई मित्र जरूरतमंद हो तो, आप उसकी किस प्रकार सहायता करेंगे?

सोचिए और लिखिए

- हमें मित्र की आवश्यकता क्यों होती है?

  _____

- मित्र हमारे लिए क्या–क्या करते हैं?

  _____

- कभी आपने अपने किसी मित्र की सहायता की है? यदि हाँ, तो किस तरह ?

_____

_____

यह भी कीजिए

- अपने पिता जी से उनके घनिष्ठ मित्रों के बारे में बातचीत कीजिए।

कावेरी की बैचेनी

आपने दो मित्रों की कहानी पढ़ी, मित्रता मनुष्यों के बीच में तो होती ही है। पर क्या आपने कभी जानवर और मनुष्यों के बीच मित्रता देखी है ?

आओ, आपको गोपाल की कहानी सुनाते हैं।

गोपाल ने अपने घर पर एक गाय पाल रखी थी। वह गाय को बड़े लाड़– प्यार से रखता था। उसने उसका नाम कावेरी रखा था। जैसे ही वह विद्यालय से घर आता था, गोपाल कावेरी व उसके बछड़े के गले और शरीर को हाथ से सहलाता, फिर उसे हरी–हरी घास खाने को देता था। खाना खिलाते–खिलाते वह उसको दुलार भी करता था।

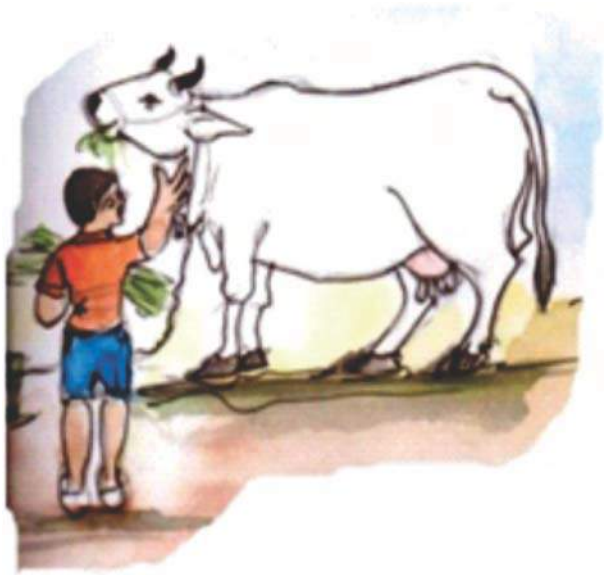

चित्र 2.2 गोपाल कावेरी के साथ

एक दिन उसे घर आने में देरी हो गई। उसकी गाय रँभाने

लगी। बैचेन होकर इधर–उधर ताकने लगी। गोपाल की माँ गाय को देख रही थी। अचानक गाय रस्सी तुड़वा कर भाग गई। गोपाल की माँ भी उसके पीछे भागी, पर गाय नहीं मिली। माँ निराश होकर घर आ गई और गोपाल का इंतजार करने लगी।

थोड़ी देर में माँ ने देखा गोपाल और गाय दोनों साथ–साथ आ रहे हैं। उसकी माँ समझ गई कि कावेरी गोपाल के देरी से आने से बैचेन हो गई थी और उसको लेने चली गई थी। अगर हम जानवरों को प्रेम से रखें तो, वे भी हमारे अच्छे मित्र बन सकते हैं।

चित्र 2.3 गोपाल कावेरी के साथ घर लौटते हुए

सोचिए और बताइए

- कावेरी क्यों बेचैन हो गई?
- गोपाल की तरह आपकी किसी जानवर से मित्रता हुई है तो, आप कक्षा में अपने अनुभव सुनाइए।

स्वामीभक्ति

महाराणा प्रताप का स्वामीभक्त व प्रिय घोड़ा चेतक था। हल्दीघाटी के युद्ध में महाराणा प्रताप को सुरक्षित स्थान तक पहुँचाने के लिए वह एक पैर से जख्मी होने के बावजूद भी उन्हें बहुत दूर तक लेकर दौड़ा। रास्ते में पड़ने वाले बरसाती नाले को उसने एक छलांग में पार कर लिया। महाराणा को सुरक्षित स्थान पर पहुँचाने के बाद चेतक ने अपने प्राण त्याग दिए।

चित्र 2.4 चेतक के साथ महाराणा प्रताप

इतिहास में चेतक जैसी स्वामीभक्ति और मित्रता की मिसाल कम ही देखने को नहीं मिलती है। इसी कारण महाराणा प्रताप के साथ–साथ चेतक को हमेशा याद किया जाता है। दिल्ली से उदयपुर चलने वाली एक रेलगाड़ी का नाम भी चेतक एक्सप्रेस रखा गया है।

सोचिए और बताइए

- चेतक कौन था?
- चेतक का महाराणा प्रताप से क्या संबंध था?
- चेतक को हम क्यों याद करते हैं?

शिक्षक निर्देश :– शिक्षक सच्चे मित्रों के दृष्टांत प्रस्तुत करते हुए मित्रता की समझ विकसित करें। छात्रों से अपने–अपने अच्छे मित्रो के नाम एवं अच्छे कार्यो पर चर्चा करें एवं प्रस्तुति करवावें।

- युद्ध से क्या–क्या नुकसान होते हैं?

हमने सीखा

- मित्रता पर अमीरी गरीबी का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
- जानवर भी मित्रता की भावना को समझते हैं।
- हमें जानवरों को भी प्यार से रखना चाहिए।
- चेतक, महाराणा प्रताप का स्वामीभक्त घोड़ा था। जख्मी होने के बावजूद महाराणा को सुरक्षित स्थान पर पहुँचाने के बाद चेतक ने अपने प्राण त्याग दिए।
- हमें विपत्ति के समय अपने मित्रों की सहायता करनी चाहिए।

अवसर मिल जाए तुमको, उसका लाभ उठाओ।
प्यारे बच्चों इस जीवन में, अच्छे मित्र बनाओ।